eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

नारीवाद सिद्धान्तों के विकास का इतिहास एवं वर्तमान समाज में नारी का स्थान

[1]डॉ0 अनुपमा श्रीवास्तव

[1]एसो0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ज0ला0ने0मेमो0परा0 महाविद्यालय, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में नारीवाद की अवधारणा और विभिन्न नारीवादी सिद्धान्तों के विकास क्रम का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न समाजों संस्कृतियों में नारीवादी अवधारणा का विकास किस प्रकार हुआ एवं कैसे लोकप्रिय हुयी। समाजषास्त्रीयों ने नारीवाद की अवधारणा का विश्लेषण जिन नारीवादी सिद्धान्तों के माध्यम से किया है तथा नारीवाद के माध्यम से महिलायें स्वयं का सशक्तीकरण करने में कहां तक सफल हुई हैं, ऐसे कई विषयों पर विचार किया गया है।

शब्द संक्षेप– महात्मा गांधी, विचार, अधिकार, सिद्धांतों की प्रासंगिकता, स्वतंत्रता।

Introduction

जनवरी नारीवाद एक समाजशास्त्रीय एवं वैश्विक अवधारणा है जिसकी दशा और दिशा विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न है। सम्पूर्ण संसार के मानव समूहों को मुख्यरूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है प्रथम–पुरूष, द्वितीय–महिला, तृतीय–ट्रांसजैण्डर। किसी भी मानव समाज की महिलाओं के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है फिर भी प्रत्येक समाज और संस्कृति में कुछ ऐसे कारक या मान्यतायें अवश्य रही हैं जिन्होंने नारी की सामाजिक स्थिति को न केवल कमजोर किया है बल्कि उनके मानव अधिकारों या प्राकृतिक अधिकारों से उन्हें वंचित कर दिया। विश्व की इन्हीं शोषणकारी प्रवृत्तियों ने एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया जिसे वर्तमान में नारीवाद के रूप में जाना जाता है। नारीवाद विमर्शों एवं आन्दोलनों का नेतृत्व प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा ही किया गया। ये नारीवादी नेत्री विश्व के विभिन्न देशों, प्रजातियों, समाजों, समुदायों का प्रतिनिधित्व करती हैं और नारीशोषण के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द कर नारी के साथ किये जाने वाले भेदभाव, उत्पीड़न और शोषण को मिटाने के लिए आवाज उठा रही है। इन वैचारिक आंदोलनों से वर्तमान समय में नारी जीवन को बेहतर बनाने की शक्ति मिल सकती है।

नारीवाद – नारीवाद एक समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन से उत्पन्न हुए सामाजिक आन्दोलन को इंगित करती है। यह एक ऐसा विचार है जो पुरूष और स्त्री के बीच समानता को स्वीकार कर नारी के बौद्धिक एवं व्यवहारिक रूप में सशक्तीकरण पर बल देता है। यह लैंगिक भेदभाव को अस्वीकार करता है जो कि नारी की हीन स्थिति का प्रमुख कारण हैं इस विचाराधारा की उत्पत्ति मूलतः समाज अर्थात् पुरूषप्रभुत्व की

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुई। नारीवाद की व्याख्या मुख्य रूप से दो अर्थों में की जाती है। पहली संकुचित अर्थ में एक राजनैतिक विचारधारा के रूप में नारीवाद महिलाओं के लिए समानता हेतु किया गया एक सामाजिक आंदोलन है जो लिंगवादी सिद्धान्त, पुरूष प्रभुत्व वर्चस्व और महिलाओं के सामाजिक शोषण की समाप्ति पर बल देता है। दूसरी, विस्तृत अर्थों में नारीवाद कई भिन्न किन्तु अन्तर्संबंधित संकल्पनाओं का एक पुंज है जिसका प्रयोग लिंग की सामाजिक यथार्थता तथा लिंग असमानता की उत्पत्ति प्रभाव एवं परिणामों के अध्ययन, विश्लेषण एवं विवेचन में किया जाता है। नारीवादी आंदोलन के इतिहास की शुरूआत मूलतः फ्रांस की क्रांति के आदर्शों में छुपी है। फ्रांस की क्रांति ने नारीवाद की प्रथम लहर को उत्पन्न किया और महिलाओं को क्रान्ति में सहभागी होने की प्रेरणा दी। ब्रिटेन में सन, 1972 में प्रकाशित 'मेरी बलस्टोनक्राफ्ट' की पुस्तक 'ए विनडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमन' ने नारीवाद की पहली लहर को जागृत किया। इस पुस्तक में शिक्षा, राजनीति और काम के अवसरों के समान महिला अधिकारों का पुरजोर समर्थन किया। भारत में भी उन्नीसवीं शताब्दी में कुछ समाज सुधारकों द्वारा महिलाओं कर प्रस्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया गया जिसमें राजा राममोहन राय, केषवचन्द्र सेन, देवेन्द्रनाथ ठाकुर के अतिरिक्त थियोसोफिकल सोसाइटी, रामकृश्ण मिशन जैसी अनेक संस्थाओं ने स्त्री शिक्षा तथा महिलाओं की अन्य समस्याओं (विवाह की आयु, विधवा–विवाह आदि) के समाधान में योगदान दिया। नारीवाद की अवधारणा को स्पश्ट करने के लिए विभिन्न समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों ने विभिन्न सिद्धान्तों की स्थापना की है जिन्हें नारीवादी सिद्धान्त कहा जाता है। नारीवादी सिद्धान्त महिलाओं और पुरूषों दोनों के लिए समानता की बात करते हैं, किन्तु इसके लिए वे विभिन्न तरीके अपनाते हैं, जैसे– उदारवादी नारीवाद, मार्कसवादी नारीवाद, रेडीकल नारीवाद और उत्तर–आधुनिक नारीवाद।

उदारवादी नारीवादः– उदारवादी नारीवादियों ने पुरूषों के समान महिलाओं के कानूनी और राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने का समर्थन किया है। उदार नारीवाद दर्शन का आधार व्यक्तिवाद के सिद्धान्त में निहित है। उदारवादी नारीवादी विचार धारा सर्वप्रथम 18वीं सदी में उभर कर सामने आई। उदारवादी नारीवाद महिलाओं को लैंगिक असमानता और उत्पीड़न से स्वतंत्र कराना चाहता था। उदारवादी विचार धारा ने महिलाओं के लिए मानवीय गरिमा और समानता को स्थापित करने का प्रयास किया। साथ ही, समाज में व्याप्त महिलाओं की अधीनता, उत्पीड़न, रीति–रिवाजों और लोकतांत्रिक मूल्यों के अर्न्तविरोधों को उजागार किया। इन्होंने मुख्य रूप से सार्वजनिक जीवन में महिलाओं के शामिल होने के अधिकारों की वकालत की।[2] उदार नारीवाद में समाज की अवधारणा को महिलाओं के लिए अनुकूलन करने हेतु स्वयं को बदलने की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है अर्थात् उदारवादी नारीवाद महिलाओं के व्यक्तिगत सशक्तिकरण पर जोर देता है। कुछ प्रमुख उदारवादी नारीवादियों में मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट, एलिजाबेथ केडी स्टैंटन, जॉन स्टुअर्ट मिल, हेरिएट टेलर, गलोरिया स्टेनिम, बेट्टी फ्राइडमैन, रेबेका वॉकर आदि के नाम शामिल हैं। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट उदारवादी नारीवाद का समर्थन करने वाली पहली महान दार्षनिक विचारक थीं। जिन्होंने महिलाओं के जीवन के हर क्षेत्र में समान अधिकारों एवं अवसरों को प्रदान करने की वकालत की।[3]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

रेडिकल नारीवादः– रेडिकल नारीवादी दृष्टिकोण एवं उससे सम्बन्धित अवधारणाओं का प्रारंभिक विकास 1960 के दशक में हुआ। महिलाओं के प्रथम उग्र–समूह का निर्माण अमेरिका में तत्कालीन माओवादी विचारधारा के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। रेडिकल नारीवाद मौजूदा राजनीति से पूर्ण स्वच्छंद, संबंध–विच्छेद स्थापित करना चाहता था। जहां महिलायें अपनी अनुभूतियों और सृजनशीलता के द्वारा अपने विचार प्रकट कर सकें। रेडिकल नारीवादियों ने हिंसा, गर्भ–नियंत्रण और यौनिकता जैसे मुद्दों पर विचार उत्तेजक समीक्षायें प्रस्तुत की। उन्होनें पितृसत्ता को समझने के लिए व्यक्तिगत और राजनैतिक आलोचना का उपयोग किया तथा रेडिकल नारीवादियों ने 'व्यक्तिगत ही राजनैतिक है।' का नारा दिया।[4] रेडिकल नारीवाद का उद्देश्य लिंगों के बीच व्याप्त सभी विभेदों को प्रकाश में लाना है तथा पुरूषों के स्त्रियों पर प्रभुत्व का विरोध करना है। यह पुरूषवादी अधीन सांस्कृतिक मूल्यों का विरोध करता है और उनको चुनौती देता है। वह परंपराओं के नये संस्कार एवं मूल्यों का सृजन करता है।[5]

मार्क्सवादी नारीवादः– मार्क्सवादी नारीवाद का उद्देश्य महिलाओं की अधीनता, उत्पादन के तरीकों और महिलाओं की स्थिति के बीच के रिश्ते की सामग्री के आधार का वर्णन करना है। मार्क्सवादी नारीवादी विचारधारा के अनुसार, महिलाओं की अधीनता और वर्गों का विभाजन दोनों ही निजी संपत्ति के विकास के साथ ऐतिहासिक दृष्टि से विकसित माने जाते हैं। मार्क्सवाद के अनुसार वर्ग–विभाजन, यौन उत्पीड़न और शोषण से महिलाओं की दशा और अधिक शोचनीय हो गई है। मार्क्स और एंगेल्स के अनुसार, लिंग उत्पीड़न के विश्लेषण में ही मार्क्सवादी नारीवाद की नींव रखी गई है। मार्क्सवादी नारीवादी विचार निजी संपत्ति, लिंग–असमानता और पूंजीवाद के दमन की आलोचना करता है। मार्क्सवादी नारीवादी विचारधारा पुरूषों और महिलाओं के बीच एक संघर्ष देखती है, जिसे केवल पूंजीवाद की समाप्ति द्वारा समाप्त किया जा सकता है। अलोचकों ने कहा है कि मार्क्सवादी नारीवाद ने इसके केवल एक ही पक्ष अर्थात् आर्थिक पक्ष की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया है, और उन्होंने दूसरे पक्षों को नजर अंदाज किया है।[6]

समाजवादी नारीवाद– समाजवादी नारीवाद सेक्स और लिंगभेद के बीच आवश्यक और तार्किक संबंध से इन्कार करता है। समाजवादी नारीवाद सामाजिक क्रान्ति द्वारा समाज की बुनियादी संरचनात्मक व्यवस्था को बदलने की बात करता है। समाजवादी नारीवादी वर्ग की असमानताओं को मिटाकर हर क्षेत्र में, महिलाओं और पुरूषों को समान रूप से कार्य करने के अधिकार देने की वकालत करते हैं। अतः समाजवादी नारीवादी सशक्तिकरण द्वारा पूंजीवादी पितृसत्तात्मकता की प्रबल शक्ति व्यवस्था को समाप्त करना चाहते हैं। समाजवादी नारीवाद का मूल विषय यह है कि पितृसत्ता को सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के संदर्भ में समझा जा सकता है। इस कथन का शास्त्रिय विकास 'फ्रेडरिक एंजेल्स' की पुस्तक 'ओरीजिन ऑफ द फेमिली, प्राइवेट प्रोपर्टी एण्ड स्टेट' (1884) में हुआ एंजेल्स का मानना था कि वर्ग शोषण यौन उत्पीड़न से भी अधिक गंभीर प्रक्रिया है।[7] महिलायें न केवल पुरूषों द्वारा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

शोषित की जाती है बल्कि वे पूंजीवाद की निजी संपत्ति की संस्था द्वारा भी शोषित होती है। समाजवादी नारीवाद एक महिला के जीवन के सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों दोनों पर केन्द्रित है। महिलाओं की आर्थिक असमान और असंतुलित स्थिति की वजह से पूंजीवाद के पुरूष शासक, उनका शोषण करते हैं। महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के लिए समाजवादी नारीवाद, नारी संस्कृति के विकास पर जोर देते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाजवादी नारीवादी विचारकों ने नारीवाद की रणनीति की व्याख्या 'शिकागो विमेन लिबरेशन' यूनियन के चैप्टर (1972) में की थी। इसका उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा महिलाओं से संपर्क कर उन्हें संगठित करना और आन्दोलन प्रारम्भ करना एवं सामूहिक कार्यवाही का विकास करना था। प्रमुख समाजवादी नारीवादी सिद्धान्तकार इस प्रकार है, शीला राबांथम, सिल्विया वालवी, नेली वॉग आदि।[8]

उत्तर–आधुनिकनारीवाद– उत्तर–आधुनिक नारीवाद एक महत्वपूर्ण दृश्टिकोण है जो उत्तर आधुनिक और बाद के संरचनात्मक सिद्धांतों को शामिल करता है तथा उदार नारीवाद और कट्टरपंथी नारीवाद को आधुनिकवाद के छोर से परे जाने के रूप में देखता है। उत्तर आधुनिक नारीवाद की षुरूआत 1980 में मानी जाती है। उत्तर आधुनिक नारीवाद फूको, सीमोन डीबूवा और जूलिया क्रिस्टेवा जैसे लेखकों ने उत्तर आधुनिक नारीवाद की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तर आधुनिक नारीवाद वर्ग, धर्म, कामुकता, पहचान, लिंग, समलैंगिकता संबंधी जटिल बहस के मुद्दों को लेकर महिलाओं की अधीनता और अन्य मुद्दों से निपटने की दिशा में कोई भी दृष्टिकोण उत्पन्न कर लेता है और कोई भी एक कारण न होने का निष्कर्ष निकलता है।

सांस्कृतिक नारीवाद– सांस्कृतिक नारीवाद महिला चरित्र या स्त्री के सकारात्मक पहलुओं और विशेषताओं को व्यक्तित्व के रूप में देखता है। सांस्कृतिक नारीवाद नारीगत विशेषताओं जैसे– सहनशीलता, परिपोषण, भावुकता एवं आश्रित आदि के नकारात्मक अर्थ को हटाकर उन्हें सकारात्मक रूप से पुनः परिभाषित करना चाहता है। सांस्कृतिक नारीवाद महिलाओं और पुरूषों के बीच लिंग भेद पर ध्यान केन्द्रित करके एक ऐसे समाज में महिला संबंधों को समझने की कोशिश करता है, जिसमें नारीवाद व्यक्तिगत परिवर्तन मान्यता और महिला केन्द्रित संस्कृतिक के निर्माण और स्त्रीत्व–पुरूषत्व की पुनर्व्याख्या के माध्यम से महिलाओं की मुक्ति का प्रयास कर सके। ऐसा माना जाता है कि मार्गरेट फुलट समीक्षक और महिला कार्यकर्ता हैं। उन्होंने सांस्कृतिक नारीवाद की परम्परा शुरू की। वे ज्ञान की भावनात्मकता महिलाओं के सहज और सरल पक्ष, प्रबुद्ध तर्कवादिता आदि विषयों पर जोर देती है।

काला नारीवाद/ब्लैक फेमिनिज्म– काले नारीवाद का उदय लिंग असमानता, वर्ग उत्पीड़न और नस्लवाद के विरोध में हुआ। 'एलिस वॉकर' और इस नारीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता ने इस बात का खुलासा किया कि काली महिलाओं का उत्पीड़न और शोषण गोरी महिलाओं के मुकाबले अधिक गहन और तीव्र था। काला नारीवाद, औपनिवेशिक (पोस्ट कोलोनियल) और तीसरी दुनिया के नारीवाद से भी अंतसंबधित है। इसमें महिलाओं को न केवल अपने लिए, अपनी संस्कृति में पुरूषों से

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

मान्यता के लिए संघर्ष, बल्कि पश्चिमी नारीवादियों से भी जूझना पड़ा। इसी दिशा में 1970 के दशक के दौरान विभिन्न काला नारीवादी संगठन उभरे। 'कोमबाही रिवर कलेक्टिव' बोस्टन में एक सक्रिय 'काला नारीवादी समलैगिक संगठन' था।[9] काला नारीवाद सिद्धांत व्यापक रूप से 1970 के दषक में अमेरिकी महिला आंदोलन की दूसरी लहर के विकास के दौरान महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता के रूप में उभरा।[10] काला नारीवादी सिद्धांत की अवधि और सिद्धान्त में अस्थिरता दिखाई देती है, क्योंकि वह राजनैतिक रूप से अन्य व्यवस्थाओं से संबंधित है– जैसे स्थानान्तरण, जाति मतभेद, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता आदि तत्व काले नारीवाद की प्रकृति में विभिन्न अर्थों का समावेश करते हैं। जिसके कारण काली राजनीति और नारीवादी राजनीति की पहचान में निरंतर एक आलोचना चलती रहती है।

उत्तर–औपनिवेशिक नारीवाद– उत्तर–औपनिवेशिक नारीवाद से अभिप्राय नारीवादी दर्शन के एक प्रकार से है, जो नस्लवाद, गैर सफेद और गैर पश्चिमी महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में उनके प्रभाव के साथ उपनिवेशवाद पर केन्द्रित है। उत्तर–औपनिवेशिक नारीवाद अतीत में उपनिवेशवाद के तहत महिलाओं की समस्या का समाधान करने की कोशिश के रूप में उभरा। इस नारीवादी विचार धारा के मुख्य दार्शनिक इस प्रकार हैं– अंरूधति रॉय, गायत्री स्पीवक, चन्द्र तलपदे, उमा नारायण, कुमकुम संगारी, लतामणि आदि। उत्तर–औपनिवेशिक नारीवादी मुख्यधारा में पश्चिमी नारीवाद के स्वदेशी और अन्य तीसरी दुनिया के नारीवादी आंदोलन के विचारों को सम्मिलित करने की बात करते हैं।

निष्कर्षता– यह कहा जा सकता है कि महिलाओं की मानवीय संवेदनाओं को अपने साथ लिये हुये विभिन्न नारीवादी मुद्दो को संबोधित करती विभिन्न धारायें अपने पदचिन्ह अंकित करती हुई अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर है। विभिन्न देश, काल और वातावरण से प्रभावित होने के परिणामस्वरूप अपने–अपने परिवेश के अनुसार नारीवादी सिद्धान्तों की विभिन्न धारायें अपने महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूर्ण कर महिलाओं के जीवन को पुष्पित कर रही हैं। नारीवादी आंदोलन केवल बौद्धिक जगत तक ही सीमित न रह कर विभिन्न देशों के गलियारों से निकल कर नारीवादियों के मन में पल्लवित हो रही है। इस विश्वास से कि एक न एक दिन विश्व की आधी आबादी को अपने अधिकारों और सम्मान की प्राप्ति शीघ्र ही होगी। नारीवादी विचारक नारी के उस परिवेश एवं वातावरण को बदलने की इच्छा रखते हैं जिनके कारण उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाया। नारीवाद नारी और पुरूष की मानसिकता और बुद्धि कौशल को बदलने की बात करता है। आज के सन्दर्भ में नारीवाद विचारधारा को स्वतंत्र रूप से विकसित होती हुई विचार श्रृंखला के रूप में देखना चाहिए। जो पुरूश विशेषाधिकार और स्त्री अधुनिकीकरण के आलोचनात्क विश्लेषण पर आधारित है। आज संपूर्ण विश्व के सभी राष्ट्रों में चाहे वह विकसित राष्ट्र हो या फिर विकासशील, अफ्रीकी या एषियाई राष्ट्र 'विश्व की नारियां' अपने अधिकार, न्याय, नैतिकता, सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने और पितृसत्ता जैसी जंजीरों से मुक्ति

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

प्राप्ति के लिए लगातार कोशिश कर रही हैं और उम्मीद की किरण दिखायी भी दे रही हैं कि वे अपने प्रयास में समय के साथ सफल अवश्य होंगी।

संदर्भ

1. हरिकृष्ण रावत, 2007, 'उच्चतर सामजशास्त्र विश्व कोश' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, पृ0 180–181
2. साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनीलोकनीता, 2001, नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दें, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फमीनिज्म, 1986
4. साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता 2001, नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दें हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ–40
5. प्इपक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, पृष्ठ–42–43
6. फ्रेडरिक एंजिल्स 1884, द ऑरिजिन ऑफ द फैमिली, प्राइवेट प्रोपर्टी एण्ड द स्टेट, हॉटिंजेन ज्यूरिख, जर्मनी।
7. प्इपक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, पृष्ठ–33
8. मर्चेन्ट कॉरलियन, 1992 चेप्टर 8, इन रेडीकल इकोलॉजी द सर्च फॉर ए लाइवेवल वर्ल्ड, न्यूयार्क, रॉट्लीज पृष्ठ–184
9. कोमबाही रिवर, कॉलेक्टिवः ए ब्लैक फेमीनिस्ट स्टेटमेन्ट, 1974
10. स्टेवी जेक्सन जैकी जोन्स, 1998 कन्टेम्पररी फेमीनिस्ट थ्योरी, एडिनवर्ग यूनीवर्सिटी प्रेस।